दिनांक
25.4.2020

शीर्षक क्रम
Topic Sl. No. - 36 & 37

स्नातक द्वितीय वर्ष
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
Hindi (Hons.) - III
&
स्नातक प्रथम वर्ष
राष्ट्र भाषा हिन्दी
R. Bhn - 100 mar

जयशंकर प्रसाद
जयशंकर प्रसाद का काव्य-साहित्य

जयशंकर प्रसाद एक जन्मजात कवि थे। नौ वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने 'कलाधर' अथवा उपनाम से अत्यंत सरस और मनोहर छंद की रचना की। सत्रह वर्ष की आयु में उनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी।

प्रसाद ने अपनी ऐतिहासिक दृष्टि, पौराणिक रुचि एवं मौलिक कल्पना का परिचय अपनी प्रारंभिक रचना 'चित्राधार' के द्वारा ही दिखा दी थी। इसके उदाहरण स्वरूप 'अयोध्या का उद्धार', 'वन मिलन' इत्यादि उल्लेखनीय हैं। यही नहीं प्रकृति-चित्रण संबंधी कविताओं में मानवीकरण की प्रवृत्ति अपने मूल रूप में प्रकट हुई है।

उनका प्रेम प्रणय-भावना यदि मुख्य रूप से वर्णित हुआ है तो यही प्रेम कभी विश्वप्रेम और कभी भक्ति-भावना का रूप धारण करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

Scanned with CamScanner

'प्रेम पथिक' इनकी दूसरी रचना में इसी भाव को स्थान दिया गया है। यह एक छोटा सा प्रबंध काव्य है। कवि ने प्रेम अनुभूतियों को व्यंजित करने के बाद इस काव्य को दार्शनिकता के रंग में रंगने का प्रयत्न किया है। यह व्यक्तिक-प्रेम से विश्व-प्रेम की ओर अग्रसर होने का संदेश देता है।

अपनी तीसरी रचना 'महाराणा का महत्व' में कवि ने महाराणा प्रताप की उदारता का चित्रण किया है। यह रचना एक ऐतिहासिक खंडकाव्य है। इस शैली में ओज गुण का विकास मिलता है।

प्रसाद राष्ट्र-प्रेम के गायक कवि भी माने जाते हैं। इनकी रचना 'कानन-कुसुम' की 'चित्रकूट' 'कुरुक्षेत्र', 'वीर बालक' आदि ऐसी कविताएँ हैं, जिनसे राष्ट्र-प्रेम से राष्ट्र-गौरव में अभिवृद्धि होती है।

प्रसाद की 'झरना' नामक कृति में उनकी भावनाएँ विभिन्न रूप में बिखरी हुई हैं। वे प्रकृति-प्रेम के साथ-साथ प्रणय की कोमलतम अभिव्यक्ति में भी परिपूर्ण हैं। साथ ही रहस्यात्मकता का समावेश भी इसमें खुलकर हुआ है। इस काव्य को प्रथम छायावादी कृति के रूप में स्वीकार किया गया है।

'आँसू' एक विरही हृदय के सहज-स्वाभाविक उच्छ्वास के रूप में प्रस्तुत है। आरंभ में कवि पाठक को संबोधित करके - 'अवकाश भला है किसको सुनने को करुण कथाएँ' - अपनी करुण गाथा

सुनने के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि तैयार करता है, उसके बाद प्रथम दर्शन से लेकर वियोग तक की व्यंजना स्पष्ट रूप से कर देता है। कवि ने इसके दूसरे संस्करण में थोड़ा परिवर्तन व परिवर्द्धन करके इसमें व्यंजित लौकिक प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम का रूप दे दिया है, किन्तु फिर भी इसकी लौकिकता के चिह्न पूरी तरह लुप्त नहीं हुए हैं। अंत में कवि का संदेश है-

"सबका निचोड़ लेकर तुम, सुख से सूखे जीवन में।
बरसो प्रभात हिमकन सा आँसू इस विश्व सदन में।"

'लहर' में कवि अधिक चिंतनशील हो गया है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि अनुभूति का अभाव इस रचना में हो। इसमें पूर्व की भाँति ही प्रेम, प्रकृति, रहस्य, जीवन-दर्शन, ऐतिहासिक-पौराणिक सभी विषयों का निरूपण हुआ है, बस इस रचना में अनुभूति की गहराई अधिक है। इस की रचनाएँ भाव & शैली दोनों दृष्टिकोणों से प्रौढ़ हैं। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

क) अतृप्त प्रेम-

"चिर तृषित कंठ से तृप्ति विधुर,
वह कौन अकिंचन आते आतुर!

× × ×

चीरे से वह उठता पुकार,
मुझको न मिला है कभी प्यार!

ख) विरहानुभूति-

मिला कहाँ वह सुख जिसका स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।"

Scanned with CamScanner

ग) प्रकृति का मानवीकरण-

अंतरिक्ष में अभी सो रही है उषा मधुबाला।
अरी अरे रुकुली भी नहीं अभी तो प्राची की मधुशाला।"

'कामायनी'

यह प्रसाद जी की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यह एक प्रबंध-काव्य है, जिसमें आदि पुरुष मनु की जीवन-गाथा वर्णित है। 'कामायनी' प्रकृति के वैभवपूर्ण दृश्यों एवं उसकी मादक चेष्टाओं के अंकन की दृष्टि से भी परिपूर्ण है। साथ ही विचारों की दृष्टि से भी यह रचना प्रौढ़ एवं महान है। आधुनिक युग की शुष्क बौद्धिकता के प्रति विपरीत उन्होंने तरल भावात्मकता का संदेश दिया है तथा जीवन में इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय की आवश्यकता बताई है -

"ज्ञान दूर, कुछ क्रिया भिन्न है इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
तीनों मिल एक न हो सके यही विडम्बना है जीवन की।

वस्तुतः भाव & शैली की दृष्टि से 'कामायनी' अनुपम है।

साथ ही साथ आधुनिक हिन्दी कवियों में जयशंकर प्रसाद का स्थान भी सर्वोच्च है उनका महत्व इसी से स्पष्ट है कि तुलसीदास जी के 'रामचरितमानस' के पश्चात् दूसरा स्थान 'कामायनी' को ही दिया जाता है।

- डॉ० अमरी प्रसाद
सह प्राचार्य,
हिन्दी - विभाग
रामनारायण महाविद्यालय,
पण्डौल, मधुबनी

Scanned with CamScanner